राष्ट्रीय ग्रामदूत परिषद्

ग्रामदूतों का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन
नई दिल्ली 29–30 दिसम्बर 2010

फोटो रिपोतार्जः रजनीकांत यादव
सज्जाः निशांत यादव

ग्रामदूतों का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन नई दि
29–30 दिसंबर 2010

फोटो रिपोतार्ज

प्रथम दिवस 29 दिसंबर 2010, देश के 3 प्रांतों के दूरदराज इलाकों से आये ग्रामदूत गढ़वाल भवन से चलकर एक रैली के रूप संविधान भवन के प्रांगण तक आये। दिल्ली की व्यस्त सड़कों पर गुजरते सैंकड़ों वाहनों को भय मिश्रित रोमांच से देखते फुटपाथों पर आगे बढ़ते इन आदिवासियों–वनवासियों–गिरिजनों ने 4.5 कि.मी का रास्त व्यस्ततम चौराहों को लांघते हुये तय किया ।

कांस्टीट्यूशन भवन के विशाल आहते में पहुंच ये 'ग्रामदूत' अत्यंत अनुशासित ढंग से वहां रखी कुसियों पर बैठे और लगभग तत्काल ही ग्रामदूतों का यह ऐतिहासिक प्रथम अधिवेशन प्रारंभ हो गया ।

कनात–परदों से घिरे खुले आहते में सामने बने मंच से स्कूल छात्राओं तथा आदिवासी क्षेत्र से आई लड़कियों–महिलाओं ने गीत प्रस्तुत किये । अतिथियों का आना प्रारंभ हो गया ..

मंचसीन अतिथियों का स्वागत प्रवेश द्वार से मंच तक नाचती ढोल बजाती बैगा युवक युवतियों की नृत्य मंडली ने किया । अतिथियों के आगे–आगे घेरे में स्वागत–नृत्य करती यह मंडली उन्हें मंच तक ले गई ।

[illegible] मालाओं तथा दुपट्टों से ग्रामदूतों ने पधारे अतिथियों का स्वा...
माननीय श्री करिया मुंडा जी, अध्यक्ष लोक सभा का
स्वागत करते श्री राजेश मालवीय

ग्रामदूतों ने सभी अन्य मंचसीन अतिथियों का स्वागत किया, इनमें माननीय श्री डी.पी. एस. चौहान, पूर्व मुख्य न्यायधीश मध्यप्रदेश हाईकोर्ट.....

...वरिष्ठ समाज सेवी श्री बनवारी लाल गौड़, अध्यक्ष भारतीय आदिम जाति सेवक संघ.

आदरणीय श्री श्यामरावजी,

पूर्व एडवोकेट जनरल म.प्र. श्री आदर्शमुनी त्रिवेदी जी,

श्रीमती किरण शर्मा जी,

29-30 दिसंबर नई दिल्ली

पूर्व मेजर जनरल डी.वी.एस. रघुवंशी जी,

ग्रामदूत संकल्पना को यथार्थ में ढालने वाले समाजसेवी श्री राजेश मालवीय–इनका हार्दिक स्वागत ग्रामदूतों ने किया

मंचीय प्रस्तुतियाँ

श्री राजेश मालवीय ने ग्रामदूतों द्वारा किये गये ग्राम विकास कार्यों पर प्रकाश डालते हुये बताया कि किस तरह से 50 ग्रामदूतों से शुरू हुई यह ग्राम विकास प्रकिया 1000 ग्रामदूतों तक पहुंची, जो दिल्ली की इस ठंड में भी अपनी प्रतिबद्धता दिखाने यहाँ आये हैं। अपने संक्षिप्त प्रतिवेदन में श्री मालवीय जी ने सर्वप्रथम ग्रामदूतों को ही मंच से अपनी बात कहने आमंत्रित किया

प्रस्तुती–श्रीमती पुष्पा ग्रामदूत बैतूल, घोड़ाडोंगरी ब्लाक

गत सात वर्षों से ग्रामदूत हूँ, ग्रामदूतों की जिला अध्यक्ष भी हूँ । गॉव के लोगों को अधिकार की बात सिखाती हूँ। समय पर अनाज दो, सही नाप, उचित मूल्य,राशन दुकान पर लोग मांग करने लगे हैं, महिलायें भी। महिलायें पहले नाम नहीं बता पाती थीं,अब बेझिझक बैंक चली जाती हैं। महिलायें समूह की बचत से काम चलाती हैं, साहूकार के पास नहीं जाना पड़ता। माचना नदी से रेत निकालकर शहरों में बेचने का विरोध किया, ठेकेदार के ट्रेक रोके, गांव के संसाधनों पर गांव वालों का हक जताया। अपना जंगल अपना है । अपना राज है ग्राम स्वराज यह लोगों को सिखाया। वृद्धा पेंशन के केस निपटाये ।

पूरे जोश और स्पष्टता से ग्रामदूत श्रीमती पुष्पा ने अपनी बात रखी।

ग्रामदूत श्री गन्नू सिंह परस्ते

निवास, मंडला से आये वरिष्ठ ग्रामदूत श्री गन्नूसिंग परस्ते 72 ग्रामदूतों के संगठन अध्यक्ष हैं, निः शुल्क समाज सेवा करते हैं, लोगों में अधिकारों हेतु जाग्रती लाना, समस्याओं को ब्लाक – जिला प्रशासन तक ले जाना, वन भूमि अधिकार दिलवाना, रोजागार दिलवाना समूह बनवाना, इस तरह के कार्यों को अंजाम दिया है । आगे भी सेवा कार्य हेतु वे प्रतिबद्ध है ।

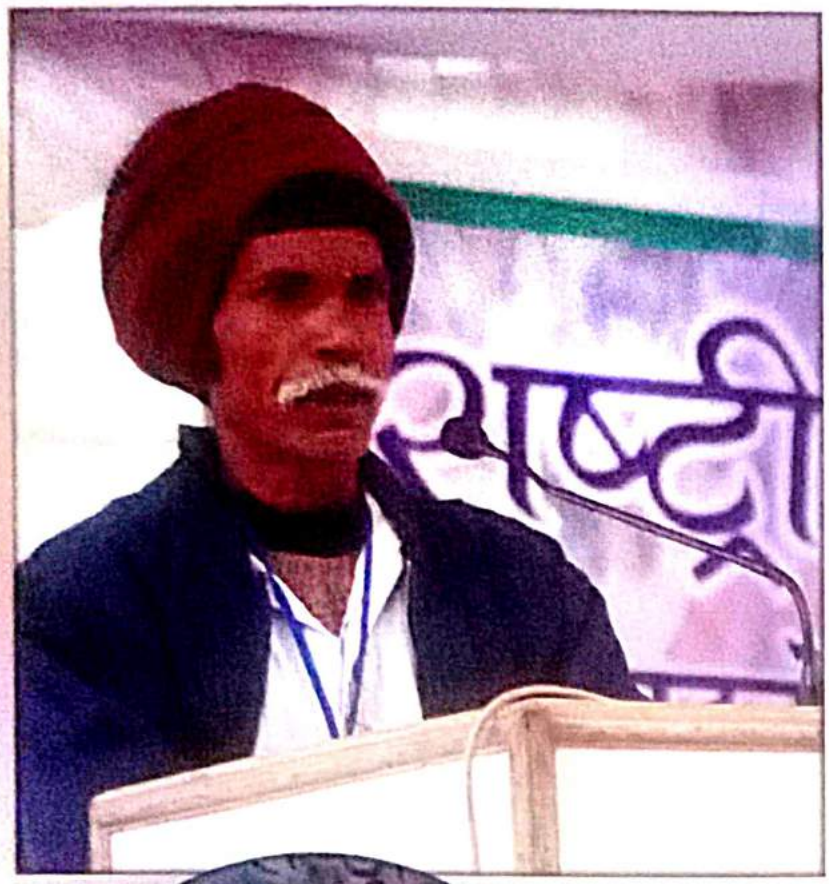

ग्रामदूत श्रीमती मंजू उर्वे

महिला जागृती एवं सशक्तीकरण हेतु महिला स्व.सहायता समूह बनाये हैं जिनके माध्यम से निवास ब्लाक में स्व. सहायता स्व.रोजगार के कार्य हुये हैं।

युवा ग्रामदूत फूलदास पड़वार

जिला डिण्डौरी बैगाचक से आये इस युवक ने बताया कि वह सन 2003 में जब 13 वर्ष का था तब से समाजसेवा को उत्सुक था फिर ग्रामदूत के रूप में सन् 2008 में उसे मौका दिया गया । लोगों की समस्याओं खासकर मजदूरी भुगतान में अनियमितता का मुद्दा उठाकर आदिवासियों को मजदूरी दिलवाई । गांव में बैठक लेता हूँ ।

श्री ग्राम गीता मडली की प्रस्तुती

पारंपरिक वाद्य यंत्रों की अनुगूंज के बीच प्रस्तुती देती महाराष्ट्र से आई मंडली ने भजनों के माध्यम से ग्रामदूत आख्यान गाया और इस अभियान को संत तुकड़ोजी महाराज के समाज सेवा भाव से जोड़ा। आशय था तुकड़ोजी ने खेड़ुत को जागरूक किया, अब यही काम ग्रामदूत कर रहे हैं। ठिठुरती ठंड में इस गमकदार, ठेठ देहाती प्रस्तुती ने लोगों को उर्जा से भर दिया । देश भक्ति पूर्ण, वीर रस से ओतप्रोत प्रस्तुतियाँ मानों ग्रामीण चौपाल को दिल्ली ले आई ऐसा समां बांधा श्री ग्राम–गीता मंडली ने

माननीय न्यायाधीश श्री डी.पी.एस.चौहान द्वारा ग्रामदूतों को शपथ दिलाना

ग्रामदूत अभियान की शुरूआत में सन् 2003–04 में आदिवासी बहुल जिला डिण्डौरी में पावन नर्मदा नदी के तट पर माननीय न्यायाधीश श्री चौहान ने 100 ग्रामदूतों को निष्ठाभाव से सेवा करने की शपथ दिलाई थी। अपनी बढ़ती उम्र और दिल्ली की असहनीय ठंड की परवाह न करते हुए श्री चौहान बम्बई से यहाँ पधारे और यहाँ आये 1000 ग्रामदूतों को इस पावन सेवाकार्य को पूरी क्षमता से आगे बढ़ाने की शपथ दिलाई।

अपने संक्षिप्त और सारगर्भित उद्‌बोधन में श्री चौहान ने ग्रामदूतों के निःशुल्क सेवा कार्य को सराहा । ग्रामदूतों की परिषद बने तभी यह कार्य सुचारू रूप से आगे बढ़ेगा ऐसा मत था न्यायधीश श्री चौहान का । एक अनुभवी और परिपक्व न्यायधीश की भावुक प्रस्तुती ग्रामदूत कार्यकम से उनके जुड़ाव को दिखा रही थी ।

श्यामराव जी वरिष्ठ समाज सेवक

54 वर्षों से आदिवासियों की सेवारत भारतीय आदिम जाति सेवक संघ के आजीवन सदस्य श्याम राव जी ने बताया कि 3 प्रांतों में कार्यरत 10 संस्थाओं ने अपने अपने कार्य क्षेत्र में ग्रामदूत तैयार किये हैं. भारतीय आदिम जाति सेवक संघ अभियान में सहयोग करेगा । परिषद को कोई अनुदान नहीं है फिर भी ग्रामदूत बिना आर्थिक लालच के कार्य कर रहे हैं । सरकारी प्रोग्रामों के कियान्वयन में मदद कर रहे हैं। सरकार के दिये अधिकारों की लड़ाई ग्रामदूत लड़ रहे हैं । स्कूल बंद रहते हैं मध्यान्ह भोजन नहीं पहुंचता, इसकी लड़ाई भी ग्रामदूत लड़ते हैं। महात्मा गांधी रोजगार योजना में 3–4 महीनों से मजदूरी न मिलने की आवाज ग्रामदूतों ने उठाई ।

ग्राम अहित पर सविनय अवज्ञा आंदोलन करेंगे ग्रामदूत ।

श्री बनवारी लाल गौड़ अध्यक्ष भारतीय आदिम जाति सेवक संघ

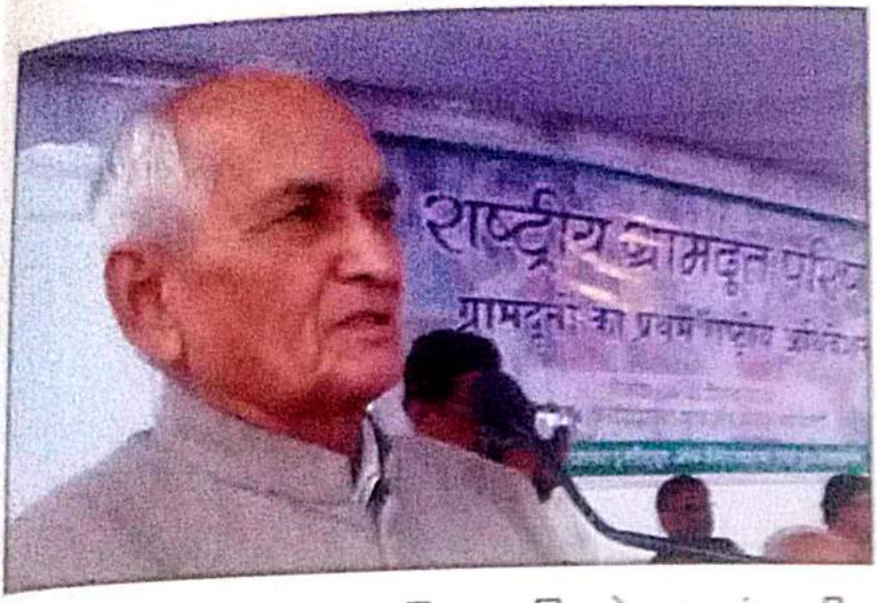

हमारा देश ऐसे आर्थिक संकट से गुजर रहा है जिसमें गरीब–अमीर की खाई बढ़ती जा रही है । ग्राम सेवक या ग्रामदूत गांधी जी की सं. कल्पना को साकार करता है। महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या कर रहे हैं, प्रगतिशील प्रदेश महाराष्ट्र में भी

भारतीय आदिम जाति सेवक संघ की ओर से ग्रामदूत अभियान का स्वागत करता हूँ गांवों में जनजागरण करने हेतु ग्रामदूतों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूँ । पू .ठक्कर बापा ने महात्मागांधी के आहवान पर निजी जीवन और पदों के सब आकर्षण छोड़कर सन् 1918–19 में आदिवासियों की सेवा प्रारंभ कर दी थी । वैसा ही महत्वपूर्ण है आपका अहिंसक और गांधीवादी सेवा कार्य ।

छत्तीसगढ़ ,आंध्रप्रदेश ,बिहार ,झारखंड ,उड़ीसा और कई अन्य क्षेत्रों में जैसे महाराष्ट्र आज नक्सलवाद से जूझ रहे हैं। नक्सलवाद में सबसे ज्यादा नुकसान गरीब आदिवासी का होता है, सुरक्षाबलों के उन परिवारों का होता है जो गरीब हैं । इस संघर्ष में यह अभियान बहुत कारगर हो सकता है भा.आदिम जाति सेवक संघ के कार्यकर्ता आपके नेतृत्व में कार्यकम को आगे बढ़ाने में सहयोग दे सकते हैं । आप लोग राजेश मालवीय जी के आमंत्रण पर दिल्ली की इस ठंड में आये इस ऐतिहासिक अधिवेशन को सफल बनाया इसका मुझे गौरव है। मुझे विश्वास है कि हम मिलकर समाज की विषमताओं को दूर करने में सफल होंगे । सबसे बड़ी समस्या है गरीबों का उद्धार कैसे हो उनको रोजगार कैसे मिले । खादी ग्रामोधोग मिशन के संयोजक बाल विजय जी यहां विराजे हैं, आज चरखा कताई बुनाई एक बहुत बड़ा माध्यम हो सकता है। अरबन एरिया बढ़ता जा रहा है, उन्हे सब सुविधायें मिल रही है वहीं आज गांवों में शौचालय जैसी मूलभूत सुविधा भी नहीं है ।

ग्रामदूत अभियान में मेरे जैसे ग्रामदूत को भी कार्य करना है मैंने भी ग्रामदूत शपथ आपके साथ आज ली है ।

श्रीमती किरण शर्मा जी – वरिष्ठ समाज सेविका

मुझे गर्व हो रहा है कि इतने ज्ञानी लोगों के साथ मंच पर मुझे बैठाया गया है मेरा स्थान तो आप लोगों के साथ उधर है जहां आप बैठे हैं । माननीय जी ने जो कैम्पेन चलाया है उसे आंदोलन के रूप में देखें उसको आगे बढ़ाते हुये देश के कोने कोने में ग्रामदूत खड़े करें । मेरी सोच है कि जितने लाख गांव हैं हमारे देश में उतने ही लाख ग्रामदूत हम खड़े कर पायें इस कैम्पेन के माध्यम से । जब तक हम प्रत्येक व्यक्ति को मजबूत नहीं बनायेंगे कोई भी विकास प्रक्रिया माने नहीं रखती है । अपने सामने बैठे 1000 ग्रामदूतों को देखकर मुझे लगता है कि यही हमारी शक्ति है और इसे ही आगे बढ़ाना होगा ।

विनोबा जी के अभिन्न साथी गांधीवादी श्री बाल विजय जी

अतिथि के नाते नहीं आपके समाज के एक सदस्य के नाते यहाँ आया हूँ । आध्यात्मिक – नैतिक शक्ति ही आगे के आपके कठिन मार्ग पर बढ़ने में सहायक होंगी। देश–विदेश में चल रहे विकास प्रयोगों की जानकारी हमको होनी चाहिए । ग्रामदूत को पवन पुत्र की तरह जितेन्द्रीय होना चाहिए और रामरूपी अपने लक्ष्य को समर्पित होना चाहिए । हवा की तरह हर जगह आपकी सहज पहुंच होनी चाहिए । वन में रहने वाले नर के हम अगुआ बनेंगे – हम हनुमान बनेंगे । हम सभी वनवासी ही हैं । हम ग्राम राज्य बनायेंगे । बैर और विषमता विहीन ग्राम स्वराज हम मिलकर बनायेंगे किसी का भी शोषण न हो ऐसा समाज बनायेंगे हम ग्रामदूत। मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ समाज होगा हमारा ग्राम समाज। अन्न, वस्त्र, निवास और जीविका के साधन हर किसी का अधिकार है, आपने जो संकल्प यहां लिया है उसमें ये सभी बातें निहित है । इस संकल्प का सबको पालन करना है।

''रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाय अरू वचन न जाई''

–यह है हमारा ग्रामदूतों का संकल्प ।

सीनियर एडवोकेट श्री आदर्श मुनी त्रिवेदी

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजली में कहा है ''**व्हेयर द माइंड इज विदाउट फियर एण्ड हेड इज होल्ड हाई**'' यही है आजादी जिसे बापू ने ग्राम स्वराज कहा है। मूलभूत सुविधा मुहैया करा कर ही हम ग्राम स्वराज स्थापित कर सकेंगे । व्यवस्था परिवर्तन के बगैर संभव नहीं है । गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए माननीय राजेश मालवीय जी द्वारा उठाया गया यह कदम ही हमें ग्राम स्वराज की ओर ले जायेगा । ग्राम सभा ही ग्राम विकास के निर्णय होना चाहिए यह मैने कहा था जब मैं एडवोकेट जनरल था पर नौकरशाही ने यह नहीं होने दिया। जिस पांचवी अनुसूचि क्षेत्र से आये हैं आप सब उसमें दिये गये अधिकारों को पूरी तरह अनदेखा कर दिया गया जल–जंगल–जमीन पर दिये अधिकारों को नकार दिया गया । आपके क्षेत्र में लागू किया गया कोई भी कानून राज्यपाल के संशोधन के बाद ही लागू किया जाये, पर यहां भी राजनीति चली, मुझे कहना पड़ेगा ।

ग्रामदूत की वही भूमिका है जो हनुमान ने निभाई थी सीता तक संदेश पहुचांने की ''कि राम आ रहे हैं'' – ग्रामदूत के भी ग्रामों में यही संदेश पहुंचाना है कि कानून व्यवस्था हम लायेंगे ग्राम स्वराज लायेंगे हम । ग्रामदूतों ने दिल्ली आकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया– **''दीन सबन को लखत है और दीन हीं लखे न कोई''** इस परिस्थिति को आपको बदलना होगा ।

वन अधिकार कानून लागू होने के बाद भी 2.5 लाख आवेदन निरस्त किये गये इसकी लडाई भी ग्रामदूतों को लड़ना होगा । भूमि अधिग्रहण पर भी ग्रामदूतों को लडाई लड़नी होगी । पांचवी अनुसूचि में उल्लेखित अधिकारों के तहत हनुमान के समान अपना बलवान रूप दिखाना होगा, वे सत्ता में प्रशासन में बैठे बडे ताकतवर लोग तुम्हे छोटे छोटे बंदर समझते हैं उन्हें दिखाना होगी अपनी विराट शक्ति– गांव के लोगों को संगठित कर आप विराट रूपा बन सकते हैं। आपको राजेश मालवीय के साथ खड़े होना होगा ।

न्यायमूर्ती श्री डी.पी.एस. चौहान

मीडिया में आती खबरों की परवाह न करके आप सब कड़ी ठंड से कांपती दिल्ली में आये । आपकी प्रतिबद्धता हेतु बधाई।

करिया मुंडा जी

उपस्थित ग्रामदूत भाई-बहिनों,

माननीय जी को इन प्रयासों को देखने समझने की इच्छा हुई तो यहां आपके बीच चला आया, भाषण देने की इच्छा से नहीं आया। कोट-पेन्ट पहना हूँ पर आप जैसा ही शुद्ध आदिवासी हूँ आप जैसा वनवासी ,जनजाति का हूँ मैं ।

शास्त्रों में लिखा है कि भारत की आत्मा गांवों में रहती है जमाने से आज तक हम यही पढ़ते आये हैं, इसलिए गांव को आगे बढ़ाना वहां विकास करना यह हमारा पहला कर्तव्य है। आज हम देख रहे हैं क्या स्थिति गांव की है लेकिन आजादी मिलने के बाद से आज तक उस ठहरी हुई भारत की आत्मा को गिराने दबाने के प्रयास ही हुये हैं। यही हाल शहर के लोगों का भी है, किसी की आवाज नहीं निकलती, ये हमारी आजादी की उपलब्धि है । मैं कहता हूँ गांव का विकास होना ही भारत का विकास है। शहरों में आलीशान घर, फाईव स्टार होटल हैं वहीं गांव बहुत सी सुविधाओं से वंचित है उन्हें आगे बढ़ने से रोका गया है। देश में लाखों गैर सरकारी संस्थायें है, सब गांव के नाम पर खुली हैं और सब दिल्ली में हैं। सरकार से अनुदान लेते हैं वाउचर बनाते हैं, आडिट कराते हैं रिपोर्ट जमा करते हैं, पर यह नहीं देखा जाता कि जिनके नाम पर पैसा लिया गया वहां वह काम हुआ भी कि नही, देखने कोई नहीं आता। गांव के विकास के लिए सरकारी खजाने का खैराती बांटा जा रहा है, अरबों-खरबों बंटा गांव के विकास हेतु पर गांव आज भी वैसा का वैसा ही है ।

पहले गांव के लोग शहर नहीं जाते थे, अब शहर की ओर भाग रहे है। एक लाइन में कहे तो आजादी के 63 साल मे नगर तो बसे गांव उजड़ गये । 36 लाख आबादी वाला दिल्ली आज एक करोड़ से ज्यादा आबादी वाला हो गया । ये बढ़ी आबादी ज्यादातर उन गांव के लोगों की है जो शहर की ओर भागते हैं । गांव उजाड़ो शहर बसाओ । गांव में पीने का पानी नहीं यहां लेट्रिन मे एक बार मे कई लिटर इस्तेमाल होता है ।

चाहे जो भी सरकार आई–गई किसी ने भी गांव की चिंता नहीं की। पढ़े लिखे तो रोड जमा करेंगे कांच फोड़ेंगे,गांव वाले तो सीधे हैं बांस की तरह यह वे भी जानते हैं, ग्रामदूत ही गांव की लड़ाई लड़ सकता है यह शुरूआत यदि आजादी के समय होती तो आज गांव खुशहाल दिखता । शहर को अनाज गांव देता है, शुद्ध पानी जंगल पहाड़ देता है शहर की सब सुविधा गांव से है परन्तु पढ़े लिखे शहर वाले गांव को भूल गये । इसीलिए बनवारी जी ने थोडा बहुत कहा कि बंदूक वाली पार्टी वहां पैदा हो गई है। क्यों पैदा हो गई ये पार्टी क्योंकि वहां गांव में काम नहीं है, पढाई से भी नही है काम वहां अधकचरा पढ़ाई है। गांव में जाग्रति लाना, शोषण के विरूद्ध उन्हें संगठित कर लड़ने हेतु प्रेरित करना,ग्रामदूत ने रचनात्मक कार्य करके यह कर दिखाया है। देरी से ही सही आपने भारत की आत्मा को जाग्रत किया है। गांवों में जाग्रती आ जायेगी तो देश का नक्शा बदल जायेगा । भारत का एक नया मानचित्र इसी रास्ते से बनेगा । कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इसलिए ग्रामदूतों को यह काम आगे बढ़ाना चाहिये, काम कठिन है । स्वेच्छा से अवैतनिक समाज सेवा करना सबसे कठिन काम है । पैसा देने पर भी लोग यह नहीं कर रहे हैं तो स्वेच्छिक अवैतनिक से बड़ा कोई काम नहीं है। निर्वाह करना बहुत कठिन है पर जिस व्यक्ति ने इस कठिन रास्ते को तय कर लिया उसके लिये दुनिया में फिर कुछ भी कठिन नहीं है । हमने कठिन संकल्प लिया है आज। भारत का नया मानचित्र बनाना आप प्रारंभ करें, नये साल में नयी उर्जा के साथ नई इच्छा शक्ति के साथ आप इस काम को आगे बढ़ाये यही मेरी शुभकामनायें है ।

भारत माता की जय

संस्था के वा
सदस्य श्री कनाके जी द्वारा मान
वक्ताओं के उद्बोधन हेतु
धन्यवाद देते हुये उनके मार्गदर्शन
ग्रामदूत कार्यक्रम को आगे बढ़ाने हेतु
उपस्थित ग्रामदूतों को भी धन्यवाद
दिया।

ग्रामदूतों हेतु भोजन व्यवस्था कांस्टीट्यूशन भवन प्रांगण में ही की गई थी ।

द्वितीय सत्र

प्रो.अमिताभ कूंडू ,अर्थशास्त्री,JNU दिल्ली

विषय: आदिवासी समस्यें और ग्रामदूतों की ट्रेनिंग में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका

मैं मालवीय जी के आग्रह पर यहां देश के दूर दराज क्षेत्रों से आये ग्रामदूतों से मिलने आया हूँ । कार्तिकेय ने दुनिया का चक्कर लगाया दुनिया देखने, श्री गणेश ने पार्वती जी का चक्कर लगाया, इसी तरह मैने आपसे मिलकर शॉटकट में सब देख लिया। समस्याओं को ग्रामदूत से अच्छा कोई नहीं समझ सकता, यहां कोई शार्टकट नहीं है, समस्या समाधान हेतु वहीं गांवों में रहकर ग्रामदूत ही यह कार्य कर सकते हैं। मैं आपके साथ गांवों में रहकर आपकी समस्याओं को आपसे समझना चाहूंगा। अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, पैसा बहुत है, केंद्र के पास भी राज्य के पास भी। समस्या है कि जो पैसा लगाया जाता है आप तक नहीं पहुंचता क्योंकि ऐसी इंस्टीट्यूशन नहीं बनाई गई जिसके माध्यम से पैसा आप जरूरतमंदों तक पहुंच सके। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री ने कह दिया है कि 1 रू. में से 18 पैसे पहुंचते हैं। बाहर से कोई आदमी आकर छः महीनों में गरीबों का उद्धार नहीं कर सकता, आर्थिक विकास ग्रामों में नहीं कर सकता उसके लिए एक आंदोलन की आवश्यकता है । स्थानीय लीडरशिप की आवश्यकता है । मुझे अच्छा लगा कि मालवीय जी ने यह कार्यक्रम चलाया जो मुझे लगता है कि आंदोलन का रूप ले सकता है । BDO, कलेक्टर आप तक आकर समस्याओं को समझकर दो सालों में भी उसका समाधान नहीं कर पाएंगे । इसीलिए जिम्मेदारी आप सबको लेनी पड़ेगी।

उड़ीसा में एक आदिवासी सभा में जो स्वेच्छिक संगठनों ने आयोजित की थी वहां मैं अपने एक जर्मन मित्र को साथ पहुंचा जो अपने देश से 5 करोड डालर सहायता लेकर आया था। हमने लोगों से पूछा कि यह पैसा किसको दे दें, ताकि यह आप तक पहुंचे। या तो हम इसे स्थानीय प्रशासन को दे दें या फिर सरकार को और या आपके अपने बनाये संगठन को, फैसला आपको करना है। बड़ी देर तक चर्चा के बाद लोगों ने कहा कि यदि ये जर्मन मित्र यहां 5 साल रूक सकते हैं तो पैसा उनके पास जमा रखिये उनका है तो वे ही जैसा उचित समझें गांवों के विकास में खर्च करें – अपनी सरकार अपने प्रशासन पर लोगों के अविश्वास का यह उदाहरण है । तब हमने कहा यह संभव नहीं जर्मन मित्र ने ये भी कहा आप अपना संगठन बनायें उसी को देंगे पैसा । संगठन बना और 80 प्रतिशत पैसा ग्रामीण विकास में लगा भी, मुझे लगता है यह माडल हमें चाहिए। ग्रामदूतों के आपके नेटवर्क जैसे माध्यम से सरकारी योजनाओं का पैसा आपतक पहुंचना चाहिए ताकि विकास कार्यो में लगे । देश की अर्थव्यवस्था 9 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रही है पर गरीबों की आमदानी 1 प्रतिशत भी नहीं बढ़ पाती योजना आयोग भी कहता है कि ग्रामोद्धार की योजनाये बनाई हैं हमने, पैसे का एलोकेशन भी किया है। मैं भी योजना आयोग को मीटिंग में बैठता हूँ और जानता हूँ कि ग्रामीण – आदिवासी विकास की योजनाओं का पैसा यहाँ से जाता है, फिर वह आप तक पहुंचता क्यों नहीं यह प्रश्न हमें करना होगा। मुझे खुशी है कि श्री राजेश मालवीय ने आप लोग का यह जो नेटवर्क बनाया है ग्रामदूतों का इसी तरह के माध्यम से विकास योजना गांवों, आदिवासी क्षेत्रों तक पहुंच सकती है । मालवीय जी ने अच्छी शुरूआत की है इसी तरह के संगठनों के माध्यम से दिये जा रहे पैसे का 80 प्रतिशत गरीब जरूरत मंदों तक पहुंचे यह बात मै दूरदर्शन, आकाशवाणी के कार्यकमों में ओर योजना आयोग जैसे नीतिगत निर्णय लेने वाले विभागों – निकायों की बैठकों में भी कहता हूँ – उचित माध्यम ढूंढे, योजना लाभ को हितग्राही तक पहुंचाने का ।

ग्रामदूत सारी ग्रामीण विकास योजनाओं की खोज खबर रखें, लोगों को सीधे सम्बद्ध अधिकारियों से जोड़ें और योजनाओं का उचित क्रियान्वयन समय पर कराये । सरकारी पैसे के 'लीकेज' को रोकें । ग्रामदूत नेटवर्क जिसकी शुरुवात मालवीय जी ने की है वह राष्ट्रीय स्तर का नेटवर्क बने और इसको सरकारी योजनाओं से जोड़ सके यदि यह हो सकता तो निश्चित रूप से सरकारी कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ आप तक पहुंच पायेगा । मैं योजना आयोग में भी यही कहूंगा कि इस तरह के नेटवर्क को योजनाओं से जोड़ें जो सरकारी कार्यक्रमों को गांवों तक ले जाने में मददगार होगा । ऐसा राष्ट्रीय नेटवर्क बनें तब योजनाओं का सारा पैसा लोगों तक पहुंचेगा। ग्रामदूतों को उचित मानदेय उनके काम का भी देना चाहिये, ग्रामदूतों को सरकारी योजना से जोड़ने का उचित मानदेय सरकार को देना चाहिये। 11 वीं या 12 वीं पंचवर्षीय योजनाओं में सरकार इस प्रक्रिया को अपनाये यही मैं कहूंगा सभी सक्षम लोगों से।

मालवीय जी का कमेंट

प्रो. कुंडू यूं तो युनिवर्सिटी में छात्रों को पढ़ाते हैं पर भारत के आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में भी इनकी गहरी रूचि है। छिंदवाड़ा मंडला, डिण्डौरी जैसे हमारे कार्य क्षेत्रों में वे अक्सर आते हैं और बगैर औपचारिकता के लोगों के बीच ही हमारे साथ ठहरते हैं । जब हम सिर्फ 50 ग्रामदूत बना पाये थे तब से वे हमारे इस 'ग्रामदूत' कार्यक्रम को जानते है । यहाँ दिल्ली में वे योजना आयोग की मीटिंगों में भी बैठते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इनके मार्गदर्शन में हम ग्रामदूत अभियान को सरकारी योजनाओं से जोड़ सकेंगे ।

श्री देवेन्द्र शर्मा

ग्रामीण परिवेश से हूं , वहीं रहकर गांव के लिए ही कार्य करता हूं 'विकास ज्योति' मेंग्जीन के माध्यम से ग्राम चौपालों तक कृषि, पारंपरिक औजार, नई तकनीकी को मैग्जीन माध्यम से पहुचांता हूं । औषधी पौधों पर किताब लिखी है । मैं भी ग्रामदूत हूँ। औषधीय पौधे कैसे लगाना, उनका प्रोसेसिंग गांवों में ही करना, मैने यह सब केवल गांव वालों के लिए ही किया है अतः खुदको मैं आप जितना ही ग्रामदूत मानता हूँ । सूचनायें, टेकनिकल जानकारी लेकर गांव में जाता हूँ कैसी खाद, कीटनाशक बीज गांव तक पहुंचे इसकी जानकारी गांव वालों तक पहुंचाता हूँ ।

डॉ. सूरजभान
भूमि संरक्षण संस्था के अध्यक्ष

हमारी सभायें तो दिल्ली तक सीमित रही पर आपने यहां आकर, हमारे काम को स्वयं विस्तार दिया। कृषि ही देश विकास का आधार है पर कृषि क्षेत्र में हमारे देश में उतना विकास नहीं हो पाया। भुखमरी की जो हालत 51–52 में थी बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में उसमें ज्यादा सुधार नहीं हो पाया है । भुखमरी – गरीबी वहीं के वहीं रुकी पड़ी है। उसका कारण समुचित रोजगार की कमी है। कृषि को महत्व देकर ही ग्रामीण रोजगार बढ़ाना संभव है। कृषि को उद्योग का दर्जा नहीं दिया सरकार ने । मिट्टी और पानी कृषि के अहम तत्व हैं इनका सदुपयोग करें। अवैज्ञानिक तरीकों से इनका नुकसान होगा । 1420 लाख हेक्टर में खेती हो रही है इस क्षेत्र पर कई दबाव हैं। 70 प्रतिशत जनता खेती पर आधारित है वहीं हमें खिला रही है। वर्षा आधारित ज्यादातर खेती है हमारी, 35 प्रतिशत सिंचित भाग है, जो कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत देता है। असिंचत 65 प्रतिशत भूमि से 40 प्रतिशत उत्पादन मिलता है। सिंचित 1 हेक्टेयर में पैदावार 2 से 2.5 टन तक होती है । असिंचित में यह बहुत कम है । इस ओर समुचित प्रयास करने होंगे। परंपरागत तकनीक से भी भरपूर उत्पादन लीजियेगा ।

डॉ जे एस कामरी

खुशी की बात है कि गांव के बच्चे दिल्ली में आये हैं। जरूरी है कि दिल्ली में बैठे साइन्टिस्ट्स की आगामी प्रोग्राम लेकर वहां गांवों में पहुंचे । गांव में मैं पैदा हुआ पला अंग्रेजी को बगैर, स्कूल से ए बी सी डी सीखी । मेरी मां कहती थी ''खेती बाड़ी और कर्ज में डूबो'' और गांव वाले भी यही कहते थे।

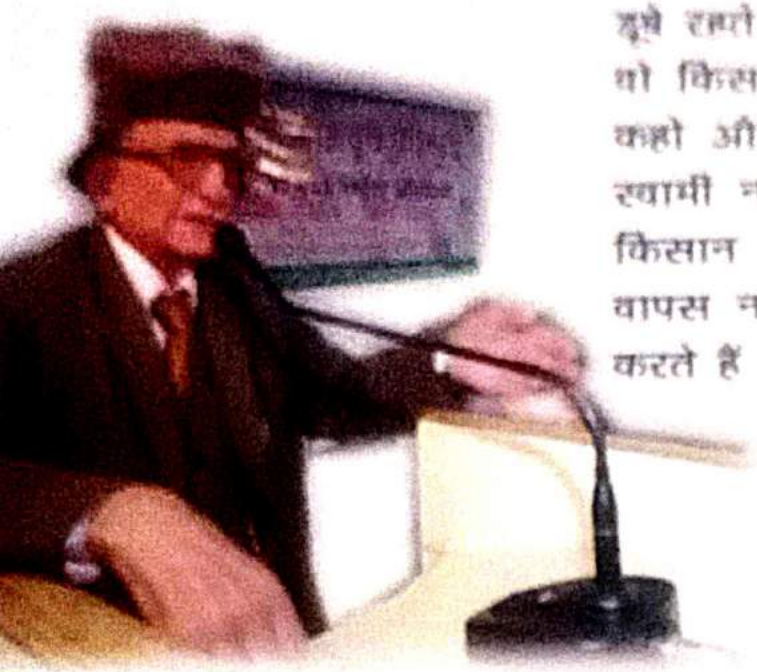

मेरे पिता की बड़ी खेती थी और वे हमेशा कर्ज में डूबे रहते थे । इस समस्या से कैसे निकला जाये । वो किसान इंतजार ही कर रहा है कि आप जाकर कहो और वह आगे बढ़ेगा । कृषि के विशेषज्ञ डा. स्वामी नाथन ने भी अपनी किताब में कहा है कि किसान खेती में जितना पैसा लगाता है वह भी वापस नहीं आता गांव के लोग अच्छे है आवभगत करते हैं उनको लालच नहीं है ।

गांव के उत्पादन को शहरी उद्योग प्रोसेस करके कमाते हैं यह प्रकिया गांव वाले करें तो वे पैसा कमायेंगे । राजेश मालवीय जी को इस पहल के लिए बधाई देता हूँ उनसे गुजारिश है कि वो ग्रामीण उद्योगों हेतु भी ग्रामदूतों को प्रेरित करें ।

प्रोफेसर संदीप लाल
इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट में बीज विशेषज्ञ

कृषि में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है बीज और जब तक बीज उत्तम नहीं होगा हमारी पैदावार भी उत्तम नहीं होगी, ज्यादा नहीं होगी। हमारा कृषि क्षेत्र कम है और पूरा भर चुका है अत: पैदावार को इस सीमित क्षेत्र में बढ़ाने हेतु उत्तम बीज का बड़ा योगदान है 'सुबीजं सुक्षेत्र जायते संपदायते' ग्रंथों में भी लिखा है।

हमारा 85 प्रतिशत बीज हमारे किसान भाई खुद बनाते हैं सिर्फ 15 प्रतिशत नया बीज इस्तेमाल करते हैं इसका कारण है किसान भाईयों में सही बीज उत्पादन के प्रति जागरूकता की कमी, हमारा संस्थान आपको इस क्षेत्र में ट्रेनिंग दे सकता है आपका स्वागत है संस्थान में आयें। ग्रामदूतों के माध्यम से अपनी को–आपरेटिव सोसायटी बनाकर अपना स्वयं का बीज उत्पादन आप करें,

प्रायवेट बीज कम्पनियां हमारी जमीन हमारे संसाधन इस्तेमाल कर सारा लाभ कमा ले जाती है मैं आहवान करता हूं कि आप आगे आये अपना स्वयं का बेहतर बीज बनायें और कृषि उत्पादन को बढ़ायें । इस हेतु हमारे देशव्यापी नेटवर्क का फायदा आप लें। कृषि अनुसंधान संस्थान इस हेतु ट्रेनिंग देता है – कृषि विश्वविद्यालयों के माध्यम से भी ट्रेनिंग दी जाती है। सहकारी समिति बनाकर इसका लाभ किसान भाई अवश्य ले यही मेरा आग्रह है ।

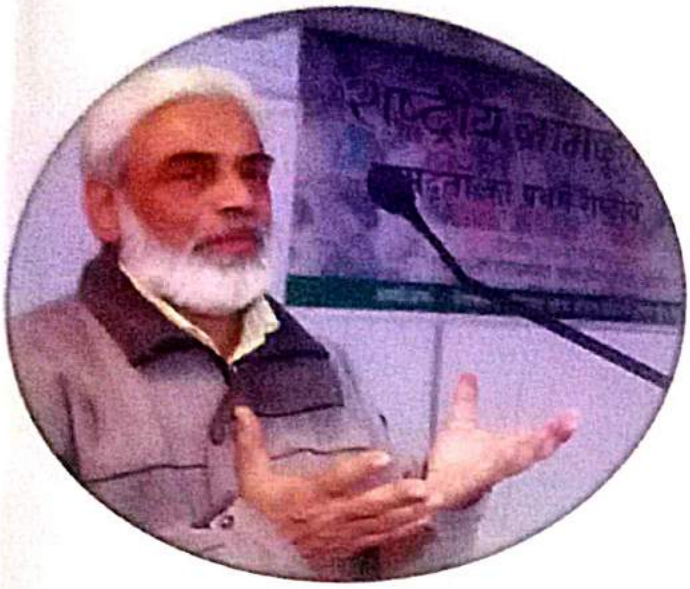

नेशनल सीड कार्पोरेशन के चीफ इंजीनियर श्री ब्रम्हानंद जी

बीज एक मूलभूत इकाई है अतः अच्छे उत्पादन हेतु उत्तम गुणवत्ता का बीज होना चाहिए । अच्छी तैयार की गई जमीन में अच्छा बीज डालने से अच्छी फसल होगी यह गारंटी है पर चूंकि यह एक ओपन इंडस्ट्री है किसान लोग परमात्मा पर विश्वास करते हैं इंद्र देवता (रेनगाड) प्रसन्न हुये टाइम पर बरसात हो गई, बोआई हो गई तो अच्छी फसल होगी ही आखिर कटते टाइम तक भी किसान की फॅसल अगर घर में पहुंच जाये तो सुरक्षित है। कभी आंधी ओले आ गये तो नुकसान की संभावना हमेशा बनी रहती है। पहले जनसंख्या कम थी खेती भी कम होती थी ज्यादा संसाधन नहीं थे फिर सिंचाई के साधन बढ़े तो खेती भी बढी। 60 के दशक तक अनाज बाहर देश से आता था हर बार अमेरिका के सामने हाथ फैलाना कि खाने को अनाज दो, बोने को बीज दो, वह बीज आधा उत्पादन ही करता था फिर किसान मूंग मोठ खाली खेत में डाल देता था।

नई टेक्नोलाजी आ जाने के बाद अब उपलब्ध जमीन में दो फसलें लेकर पैदावार बढ़ा सकते हैं । 'रेन फेड' फसल लेने के बाद वहीं बाजरा ज्वार, मूंग मोठ की फसल ले सकते हैं । 18 हजार मीट्रीक टन हाई ब्रीड बीज मंगाकर 'ग्रीन रिवाल्यूशन' शुरू किया गया । हाई ब्रिड कांसेप्ट के अंतर्गत भारतीय बीज निगम में यह काम किया इससे 30 साल के अंदर भारत देश आत्म निर्भर हो गया । हर प्रांत में कृषि विश्वविद्यालय खुले, कृषि विज्ञान के बढ़ने से उत्पादन बढ़ा तब अधिक पैदावार की साफ सफाई हेतु भी यंत्र आये थेशर जैसे यंत्र जिनसे ज्यादा उत्पादन को सम्हालना सरल हुआ । किसान को सस्ता बीज कैसी मिले इसके लिए एक नेशनल सीड प्रोगाम बनाया गया है फेज 1, फेज 2 । 9 प्रांतों में सीड प्रोसेसिंग प्लांट लगाये गये जिससे छनाई बिनाई द्वारा टूटे कमजोर दानों में से बीज अलग किया जाता है कचरा अलग करके शुद्ध बनाते हैं बीज को, फिर इस बीज की गुणवत्ता लेब टेस्ट कराके इसकी पैकिंग की जाती है, ताकि किसान तक उत्तम बीज पहुंचाया जा सके ।

श्री ब्रम्हानंद....

किसान को अब यह सुविधा है कि 1 एकड़ गेहू पैदावार हेतु 4 किलो बीज की थैली ले जाओ जितने क्षेत्र में बोना है उतनी थैलियां, साफ –सुथरा खेत ले जाओ और बोआई निश्चित होकर करो । स्टेण्डर्ड पैकेजिंग और कृषि संसाधनों के आ जाने से किसानों को काफी राहत मिली है। शारीरिक श्रम भी घटा है। बीजों का स्टोरेज भी सुधारा गया गेहूं बीज सालभर पड़ा रहे तो भी 85 प्रतिशत तक पैदावार देता है पर अन्य कई बीज जैसे सब्जियों के बीज उचित रख रखाव के बिना मर जाते हैं, इस दिशा में भी सुधार किया गया है ।

हमने दो सूत्र दिये, एक है – अच्छा बीज अच्छी जमीन पर बेहतर फसल देगा, साथ ही खाली पड़ी जमीन रेलवे ट्रेक सड़कों के किनार पर इस पर भी खेती करो, घरों की छत पर उगाओ । दूसरा सूत्र लाल बहादुर शास्त्री जी ने दिया था सप्ताह में एक दिन उपवास करना विदेशों के सामने अन्न हेतु हाथ फैलाने से बेहतर है आशय था अन्न का दुरूपयोग रोको । अनाज बचाकर और पैदावार बढ़ाकर हम और ज्यादा आत्मनिर्भर हो सकते हैं ।

अनाज के मंहगे और अनुपलब्ध होने में बिचौलिये और व्यापारियों का बड़ा हाथ है जिनसे शहरियों को दुगने चौगुने दाम पर अनाज मिलता है वहीं किसान का भी शोषण होता है उसे फायदा नहीं मिल पाता । सरकार भी उचित रूप से उस गांव वाले का ध्यान नहीं रख पाई जो सिर्फ किसानी ही कर सकता है, इसलिए आजादी के 60 साल बाद भी किसान की हालत पतली होती जा रही है और किसान आज भी उसी हालत में है। को–आपरेटिव बनाकर अनाज को यदि किसान भाई गांव में रोक सके तो लाभ में उनका ज्यादा हिस्सा हो सकता है ।

प्रो. अनिल डोगरा कृषि कार्य विशेषज्ञ इंजीनियर आई ए आर आई

मैं मालवीय जी का आभारी हूँ कि उनने हम लोगों को आपसे रूबरू कराया आपके सामने पेश किया । इससे भी ज्यादा मैं उनकी प्रशसा करूंगा कि उन्होंने आपको 'ग्रामदूत' का नाम दिया 'ग्रामदूत' एक बड़े सौभाग्य और स्वाभिमान की बात है पुराने जमाने में राजा महाराजाओं के दूत हुआ करते थे जो उनकी नॉलेज और उनके संदेश को लाते ले जाते थे उनकी बड़ी इज्जत थी दूत के उस स्वाभिमान को कायम रखने हेतु ज्ञानी होना जरूरी है जिसके लिए मालवीय जी ने आपको हमारे या हमें आपके सम्मुख रखा है। आप कृषि से जुड़े है इसलिए कृषि संबंधी ज्ञान होना आवश्यक है जिसे आप गांव के कृषकों के साथ बांट सकते हैं ।

पहले खेती हल बैल से हुआ करती थी पर उत्पादन बढ़ाने की जरूरत से कृषि यंत्रों का इस्तेमाल भी होने लगा उत्पादन की मांग बढी भूख की मांग बढी, नये–नये यंत्र इजाद हुये । लोकल कारीगर भी छोटे–बड़े यंत्र बनाने लगा फिर, ट्रेक्टर, पावर टिलर आये । पंजाबी में एक कहावत है '' रज के वा और रज के खा '' अर्थात ज्यादा गहाई करो तो ज्यादा उत्पादन मिलेगा । पर वह भी जरूरत से ज्यादा नहीं करना होगा । कृषि यंत्रों का सही रख रखाव कैसे हो यह आपको जानना होगा। हमारे देश में यंत्रों के सही रख रखाव और सही इस्तेमाल के अभाव में होने वाली दुघर्टनाओं से 54 हजार करोड का नुकसान होता है । फसल का भी जान माल का भी । यंत्रों के सही इस्तेमाल से इतनी बड़ी राशि को आप बचा सकते हैं । कैसे बचायेंगे– रास्तों किनारे लिखा होता है ''सावधानी–बचाव से दुर्घटना टालिये'' इसी तरह से संदेश है मशीन को सही ढंग से चलाते हैं रखरखाव करते हैं तो दुर्घटना टलेगी, चलते ट्रेक्टर ट्राली से न उतरे ।

प्रो.अनिल डोगरा...

सही स्पीड पर गहाई करें, खेत जोतें, जल्दबाजी से टूटफूट और दुर्घटना होती है कम समय में ज्यादा काम लेने की कोशिश से भी यंत्र या तो बिगडते है या दुघर्टना होती है। सही समय पर तेल दें, आईल बदलें, यंत्रों को चेक करें मशीन डिजाइन ऐसी की जाती है कि ज्यादा जोर लगाना न पड़े, यदि जोर लगाना पड़े उसे चलाने में तो समझना होगा कि आप कहीं गलती कर रहे हैं । नट–बोल्ट टाइट हो कोई पुर्जा जमा न हो, टूटा न हो, हो तो बदल दें।

ज्यादा खाद से जमीन खराब होगी अगली फसल खराब होगी आजकल जैविक खाद का प्रचलन बढ़ा है, यूरोप अमेरिका में भी । जैविक खाद केचुआ खाद आप खुद तैयार कर सकते हैं। इससे खेती में उत्पादन बढ़ेगा और जमीन भी खराब नहीं होगी।जब यंत्रो का इस्तेमाल नहीं होता था तब हम इनके इस्तेमाल की सोचते भी नहीं थे आज कम्प्युटर का भी इस्तेमाल होने लगा है। जबलपुर, म.प्र. में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में कृषी संबंधित एकत्रित आंकडों की वेबसाइट बनाई है हमने जिसमें प्रदेश के हर गावं की जमीन,फसल ,मौसम, कैसे किनती खाद देना आदि सब जानकारी एकत्र की गई, वेबसाइट खोलकर आप हर गावं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । जरूरी यही है कि आप सब भी कम्प्यूटर चलाना सीखें और सिखाये इससे सूचना प्राप्ति आपके गांव में ही सुलभ हो जायेगी इधर उधर भागना नहीं पड़ेगा । सूचना अधिकार का उपयोग करें बी.डी.ओ. कृषि अधिकारी को पोस्ट कार्ड डाले 30 दिन में आपको जानकारी मिल जायेगी।

गांवों में रोजगार सृजन और ग्रामदूत

श्री एस.डी.गर्ग पूर्व डायरेक्टर सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी एवं ग्रामीण विकास विशेषज्ञ

सबसे पहले मेरा मालवीय जी को धन्यवाद आप ग्रामदूतों को भी धन्यवाद जो ऐसे मौसम में भी बड़ी शांति से ये मैसेज सुन रहे हैं। गांव में रोजगार की संभावनायें–आप कार्य करके पैसा कमाना चाहे तो तकनीक या स्किल होना चाहिये और उसके लिए ज्ञान होना चाहिये। रिपेयर एण्ड मैटेनेंस कृषि मशीनों औजारों के सुधार और रखरखाव में दक्षता हासिल करके रोजगार पाया जा सकता है, ट्रेनिंग संस्थान मदद करेंगे इसमें। एजुकेशन एण्ड हेल्थ इसमें भी ट्रेनिंग लेना होगा। प्रोटेक्शन – उत्पादन का प्रोसेसिंग मार्केटिंग एण्ड सेल गांव वाले करेंगे तो बिचौलिये का लाभ आपको मिलेगा। प्राफिट लास एकाउंटिंग फाइनेंशियल साइड – बैंकिग, कॉपरेटिव ग्रुप के हाथ में खेती कार्य, इन्फार्मेशन एण्ड कम्युनिकेशन, कम्प्युटर की ट्रेनिंग, फूड प्रोसिसिंग कर ज्यादा फायदा कमाये यानि फसल को बेचने लायक पैदा कर वह लाभ कमाये जो बाहर के लोग अभी कमा रहे है। बाजार में गेहू, चावल,दाल सब्जियों को सीधे न बेचें, इस रा–मटेरियल को गांव में कनवर्ट करें यानि इसकी साफ सफाई और पैकिंग आदि करके फिर इसका मार्केटिंग गांव वाले खुद करें ।

रा–मटेरियल, फसल का स्टोरेज यानि उसको सुरक्षित रखना उसको प्रोसेस करना उसको पैकेज करना ग्रामदूत खुद इसमे आगे बढे इस पूरी प्रकिया को पहले खुद समझे फिर इसकी ट्रेनिंग दें। ये चारों अलग अलग प्रकियायें है । इस हेतु C.S.R.I. की लैब डिफैंस लैब,कृषि विश्वविद्यालयों की लैब है जहां से इन प्रकियाओं को समझा जा सकता है ।आप चाहें तो मालवीय जी के माध्यम से हमसे संपर्क का यह सुविधा प्राप्त कर सकते हैं ।

श्री एस.डी.गर्ग

आद्रता बढ़ जाने से हमारा जमा किया गया अनाज खराब हो जाता है। हमारी चंडीगढ़ प्रयोगशाला ने ग्रेन आद्रता मापी मीटर बनाया है यदि ग्रामदूत इस मीटर का उपयोग खुद समझ फिर गांववासी को सिखा दें तो नमी वाले अनाज को सुखाकर बहुत सा अनाज सड़ने से बचाया जा सकता है । आशय है कि अपने अनाज का सही रख रखाव कर उसका बेहतर मूल्य प्राप्त करने की तकनीकों को समझ आप अपना लाभ बढ़ा सकते हैं ।

अपना रोजगार कैसे करें–

कम्प्युटर पर उत्पादन और उसकी किसको आवश्यकता है इसकी जानकारी प्राप्त कर गावं में सुरक्षित रखें अनाज का बेहतर मूल्य प्राप्त किया जा सकता है आपके क्षेत्र में जो पैदावार होती है उसको टेस्ट करायें और जाने कि उसमें क्या गुणवत्ता है क्या खास बात है जो मध्यप्रदेश के उत्पाद की विशेषता है वह पंजाब या अन्य प्रांतों के उत्पाद अलग होगी इस तरह उसका बाहर बेहतर मूल्य मिल सकेगा । इस प्रकिया में ग्र. ामदूत को भी रोजगार मिलेगा। दो बातें ध्यान रखें उत्पाद की औषधीय गुण और उसका पौष्टिक गुण ग्रामदूत टेस्ट करके यह बता सकें तो आपके पैदावार का मूल्य एकदम ही बढ़ जायेगा। कचरे का प्रबंधन इससे उर्जा प्राप्ति, नागपूर की नीरी लैब इसमें मदद कर सकती है इसमें रोजगार मिलने की संभावनाएं है। पढ़ने लिखने और बोलने की कला सिखायें। इस हेतु आवश्यक शिक्षण प्रशिक्षण की प्रकिया में हम हमेशा आपके साथ बने रहेगें। आपके संगठन की एकता और मजबूती बनी रहे यही मै चाहता हूँ क्योकि इसी से आप अधिकारों हेतु अपनी लड़ाई लड़ सकेगें ।

सुश्री पल्लवी –

आपका यह राष्ट्रीय अधिवेशन अपने आप में एक संदेश है पूरे देश के लिए। यह अभियान आगे कैसे बढ़े इसकी चर्चा भी जरूरी है क्या दिशा हो हमारी। हम ग्रामदूत कई तरह की गाँवों की समस्याओं पर काम करते हैं, खेती संबंधित, सामाजिक समस्याएँ और भी, इन पर हम काम करते है, वंचितो के मुद्दों पर हम लोग काम करते है । पहचान की लड़ाई लड़ते है, सरकारी नीति का फायदा लोगों तक पहुँचाने का काम करते है। यह पूरा काम हम लोगों के सशक्तीकरण के लिये कर रहे है । लोगों को वह सब मिले जो उसे मिलना चाहिए जिस पर उसका हक है। सही सशक्तीकरण क्या है! सरकारी नीतियो से लोगों को जोड़ना इस दिशा में एक बहुत महत्वपूर्ण काम है पर क्या सिर्फ ऐसा कर पाने से सशक्तीकरण आयेगा। सरकारी नीति में फायदा गरीबी रेखा के नीचे वाले को मिलता। यह रेखा क्या है?

जो आदमी 12 रूपये कमाता है वह इस रेखा के उपर आ जाता है। इस देश में जहां 74 से 80 प्रतिशत लोग गरीब है इस तरह की जो रेखा सरकार अपनी नीति द्वारा बनाती है उससे किसी को क्या लाभ होगा! आज जो गरीबी रेखा के उपर है वही कल उसके नीचे आ जायेगा और उसे जो मिलता है नहीं मिलेगा । इस तरह की नीतियां किसी माने में लोगों का अशक्तीकरण भी करती है । इसके खिलाफ आवाज उठाने का काम भी और किसी का नहीं ग्रामदूतों का ही है । क्योंकि वे ही इन नीतियों को समझते है और इन पर काम करते है । ग्रमदूतों का असली काम है लोगों को सक्षम बनाना जिससे वे अपनी लड़ाई खुद लड़ सके । इसलिए ग्रामदूतों को अपना संगठन मजबूत करना होगा । यह एक लंबी लड़ाई है जिसे रोज–रोज लड़ना होगा, लोगों को साथ लेकर, इससे वे फिर अपनी लड़ाई खुद लड़ने में सक्षम हो जायेगें। इस लड़ाई में औरतों का खास कर ध्यान रखना है उन्हें जोड़ना है तभी हम इसे जीत पायेगें ।

डॉ. आर.एस.तिवारी
पूर्व श्रम आयुक्त, भारत सरकार
असंगठित क्षेत्र पर जानकारी

हम कृषि क्षेत्र में काम करने वाले लोग है अब किसान है आप में कई आदिवासी है, आप में कुछ दलित है यह आपकी दूसरी पहचान है। आप मजदूर है इसका मतलब आपके पास भूमि नही है, इसलिए कृषि मजदूर है। थोड़ी जमीन है उससे पूरे साल का गुजारा नही चल सकता इसलिए मजदूरी भी करना पड़ती है।

आपकी जमीन पर कोई प्रोजेक्ट आ गया, कोई माइनिंग प्रोजेक्ट और आपसे कहा गया जाओ हटो यहां से, विस्थापन होगा लोगों का इससे, वे मजदूर बन गये । पलायन करके काम करना पड़ता है यह मजदूरों का नकारात्मक पहचान है। मजदूर हैं तो आपको वेतन मिलेगा, एक पहचान मिलती है यदि हमारे पास जमीन है तो सकारात्मक पहचान मिलेगी।

हमारे अधिकार भी है चाहे कही भी काम करें । ऐसे में रिक्शा चलाये या कुछ भी करें। बाहर जाकर काम करने वाले मजदूरों का भी अधिकार है सरकारी कानून के तहत हमारे शोषण रोकने हेतु यह कानून है पर ठेकेदार प्रवासी मजदूरों का शोषण करते है । बंधुआ मजदूरी को भी लोग मजबूर है ।इन सब विपरीत परिस्थितियों के खिलाफ हमें संगठित होना पड़ेगा।

15–20 सालों से राज्य पीछे हट गया है जल – जंगल और जमीन पर आपके अधिकार लगातार कम होते जा रहे है । म.प्र. , छत्तीसगढ़ से इस कारण बड़ी संख्या में पलायन विस्थापन हो रहा है। जब ग्रामदूतों का संगठन बना तो यह प्रश्न उठा कि इसको कैसे चलाये? राजनीतिकरण करें या सरकार के साथ सहयोग से इसे चलाये। जब तक यह संगठन एक यूनियन के रूप में नही उतरेगा तब तक आपको आपके अधिकार नही मिलेगें।

ग्रामदूत अवधारण एक आंदोलन, एक संघर्ष है और इसके लिए आपको तैयार रहना होगा। असंगठित मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा की मान्य अवधारणा के अनुसार और वर्तमान कानूनों के अंतर्गत इनमें प्रसूति अवकाश, बाल मजदूरी प्रतिबंध, वृद्धावस्था पेंशन आदि स्थायी सामाजिक सुरक्षायें आपको मिलना ही चाहिए। इसके लिए बना कानून बड़ा कमजोर है इसको ठीक करवाना आपके अधिकारों को बढवाना होगा। आपका यह जो बड़ा संगठन बना है इसमे शिक्षण प्रशिक्षण चलता रहे ताकि कार्पोरेट, माइनर जैसी शक्तियों की जकड़ में फंसी सरकारों पर दबाव डालकर जनहित में निर्णय लेने उसे मजबूर कर सके।

कामरेड अशोक घोष –

हमारा देश आजादी के बाद दो टुकड़े हो गया । एक देश को 'इंडिया' कहते है एक देश को 'भारत'। आज मेरे सामने भारत देश बैठा है यही है हमारा देश यहां के 80 प्रतिशत लोगों को खाने नहीं मिलता ठीक से यहां किसानों को आत्महत्या करना पड़ता है। इसी असंगठित भारत से 65 प्रतिशत जी.डी.पी. आती है इस असंगठित क्षेत्र की सुरक्षा के लिये सरकार ने 5 प्रतिशत खर्चा नहीं किया, यदि करे तो यहां के भाई बहनों को कुछ न कुछ सामाजिक सुरक्षा मिल जायेगी ।

असंगठित क्षेत्र पर किये गये सरकारी सर्वे में यह बात सामने आई कि 77 प्रतिशत लोगों को 20 रू. रोजगार है। 5 आदमी का परिवार 100 रू. कमायेगा तो इससे परिवार कैसे चलेगा! इनकी सामाजिक सुरक्षा कैसे होगी यह तो सरकारी रिपोर्ट में है। इन दशा में ग्रामदूत द्वारा लाई जा रही जागरूकता हेतु उन्हें मेरी हार्दिक बधाई – संगठन बगैर राजनीतिक पार्टी से जुड़े भी बना सकते है । संविधान में प्रदत्त जल–जंगल–जमीन पर आपके अधिकार हेतु आपका संगठन बनाना होगा । दलित आदिवासी महिलाओं का सशक्तीकरण जरूरी है। इनको नेतृत्व देना होगा ।

राष्ट्रीय ग्रामदूत परिषद्

30 दिसम्बर का सत्र – दिल्ली की कोहरा भरी ठंड और व्यस्त यातायात के बीच सभा स्थल तक पैदल आते यात्री ।

रामराव जी महाले – वरिष्ठ समाज सेवी

गाँव का सच्चा कार्यकर्ता वह ग्रामदूत दिल्ली आया तो हमें उससे मिलने जाना चाहिए ऐसा मंत्रियों को लगना चाहिए था लेकिन निमंत्रण के बाद भी किसी मंत्री का दर्शन नहीं हो रहा है । वो आयेगें भी नहीं पर जब आप गाँव में संगठन खड़ा कर दोगे तो वे आपके पास आयेगें, उन नेताओं मंत्रियों की चिंता हमें नहीं करना है – काम करना है मजबूत संगठन खड़ा करना है । देश आजाद हुआ तब महात्मा गांधी ने कहा था लोगों ने शहरों से देहातों की ओर जाना चाहिए हुआ उल्टा। जो शहर की ओर आये उन्होनें अपनी शैक्षणिक बौद्धिक आर्थिक सब तरह की प्रगति कर ली जो देहात में रहे वे मूलभूत अधिकारों से भी वंचित रहे । सरकार ने गाँवों को भिखारी बनाया लोगों को लाचार बनाया और उनकी लाचारी का लाभ नेता मंत्री सिर्फ चुनाव के समय उठाते हैं । राष्ट्रीय उत्पादन में खेती किसानी का सिर्फ 20 प्रतिशत हिस्सा है जो पहले 65 प्रतिशत था । 2030 में घट कर यह हिस्सा 5 प्रतिशत रह जायेगा ऐसा विशेषज्ञ मानते है । यह हमारा कृषि प्रधान देश समाप्त हो जायेगा ।

इसको बचाने के लिये क्या करना चाहिये ?

सरकारें ये या वो लुटेरों के अड्डे हैं । झाड़ की पूजा, पहाड़, नदी की पूजा करना सिखाया आदिवासी ने जो आदिशक्ति है मातृशक्ति है । आज सरकार कहती है पर्यावरण की रक्षा करो यह काम सिर्फ आदिवासी समाज ही कर सकता है । पर्यावरण की रक्षा करने वाले आदिवासी को आज जंगल में रहने का अधिकार नहीं है । कानून है कि वह कुल्हाडी लेकर भी जंगल से नहीं निकल सकता है । माचिस की डब्बी भी जेब में नहीं रख सकता है । नेता कहते हैं दुनिया के शक्तिशाली देश में हमारा तीसरा नंबर है। वे यह भी कहते हैं यहां कोई भूखा नहीं सोता है। 2 रूपये किलो गेहूं, 3 रूपये किलो चांवल। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि दुनिया में सबसे ज्यादा कुपोषित बच्चे हमारे यहां है– 42 प्रतिशत, वहीं पाकिस्तान जैसे पिछडे कहे जाने वाले देश में कुपोषित बच्चे 5 प्रतिशत है। यह 2.3 रूपये किलो अनाज गरीबी रेखा के नीचे वालों को मिल रहा है, इसमें भी राजनीति हावी है। चहेतों को यह सुविधा दे दी गई है । पहाड पर रहने वाले आदिवासी के पास गरीबी रेखा का कार्ड नहीं है। वृद्ध पेंशन बडे लोगों को मिल रही है, 20–20 एकड़ वाले चहेतों को। हर आदिवासी को वृद्ध पेंशन, गरीब रेखा कार्ड मिले इसके लिये एक आंदोलन आपको चलाना पडेगा तभी सरकार आपके पास आयेगी।

डॉ. वैना घवले :–

आपका अभिनंदन। आपने हजारों में उपस्थित हो मालवीय जी ने आमंत्रण का सम्मान किया और वे क्या हैं यह भी आपने दिखा दिया है। यह संगठन बहुत बड़ा है। किसके मार्गदर्शन में यह संगठन आगे बढ़ेगा यह भी आप जानते है। अपने उद्देश्य पर टिके रहें, न कि अपने सामाजिक कार्य को स्वार्थ परक बनाते जायें, इसलिए काम में पारदर्शिता होना चाहिए। आपकी कविताओं से भी यहां जो बात उभरकर सामने आ रही है कि हमारा इतना ज्यादा शोषण हो रहा है कि हमें अपना राजनैतिक अथवा गैर राजनैतिक जैसी जरूरत पड़े वैसा संगठन बनाने की जरूरत पड़ी है और इसलिए मालवीय जी के आव्हान पर आप यहां दिल्ली में आये है क्योंकि जब 8–10 घंटे काम करने वाले मजदूर को उसका जायज हक भी नही मिलता तो वह अपना हक मांगता है। लोकतंत्र में भी जिनके हाथ में हमने सत्ता दी वे हमारी आवाज नहीं सुन रहे, यही बात यहां वक्ताओं के विचारों में भी सामने आई। सुभाष बाबू ने नारा लगाया था 'तुम मुझे खून दो मै तुम्हें आजादी दूंगा' ऐसा यहां एक वक्ता ने कहा था। मैं कहूँगी आज इस नारे को हम कहेगें 'तुम मुझे खून दो (वोट दो) मै तुम्हे भ्रष्टाचार दूंगा' । ऐसे वातावरण में हमारे इस संगठन का और विस्तार हो राजनीतिज्ञों पर हमारा दबाव बढ़े यह जरूरी है क्योंकि इस या उस सरकार को बदलकर हमारा भला नही होने वाला।

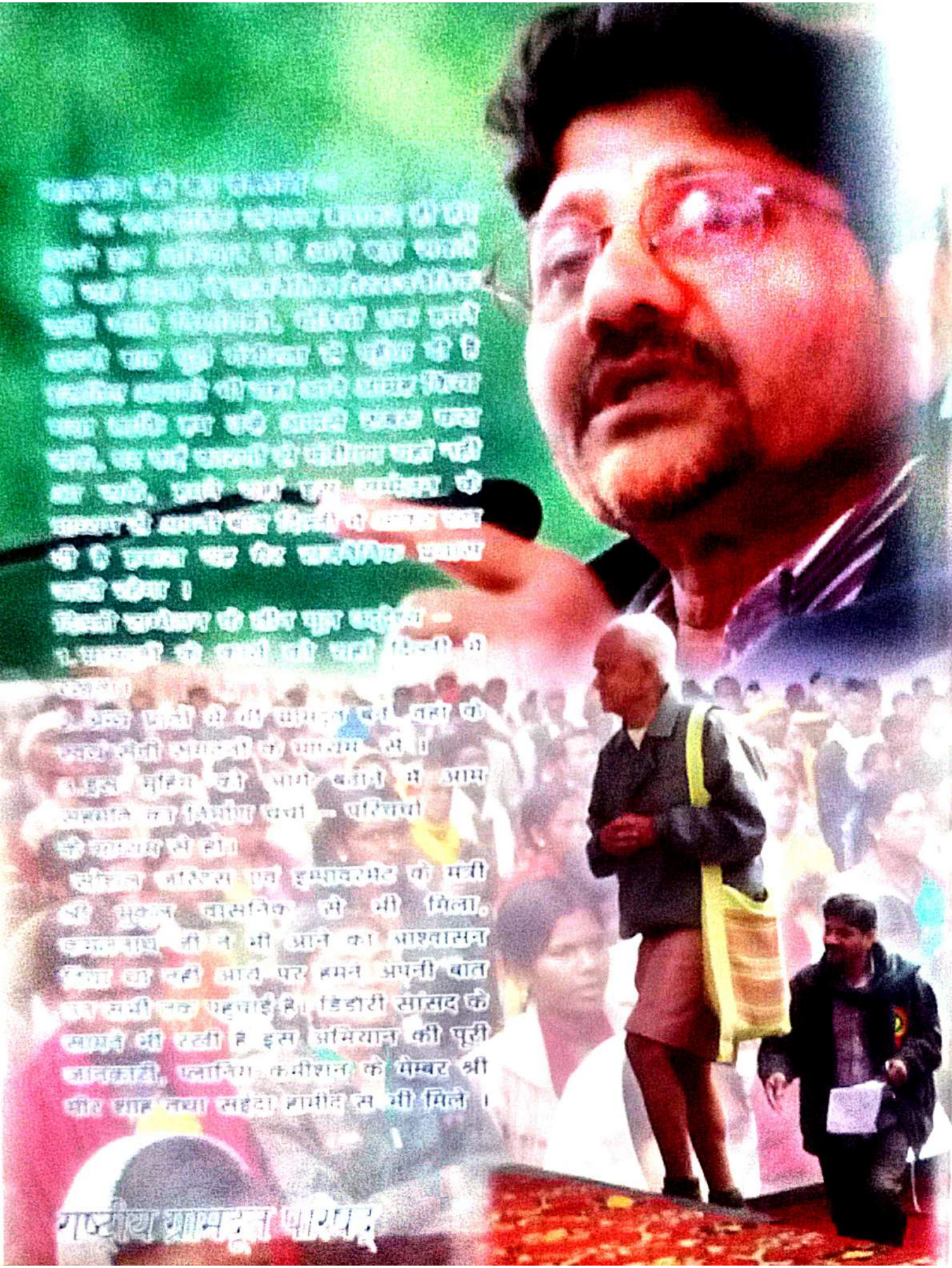

[illegible] पाई।

वरिष्ठ समाज सेवक ***श्री श्याम मनोहर*** जी द्वारा [illegible] अभियान की [illegible] ***श्री राजेश मालवीय*** जी का अभिनन्दन।

[illegible]

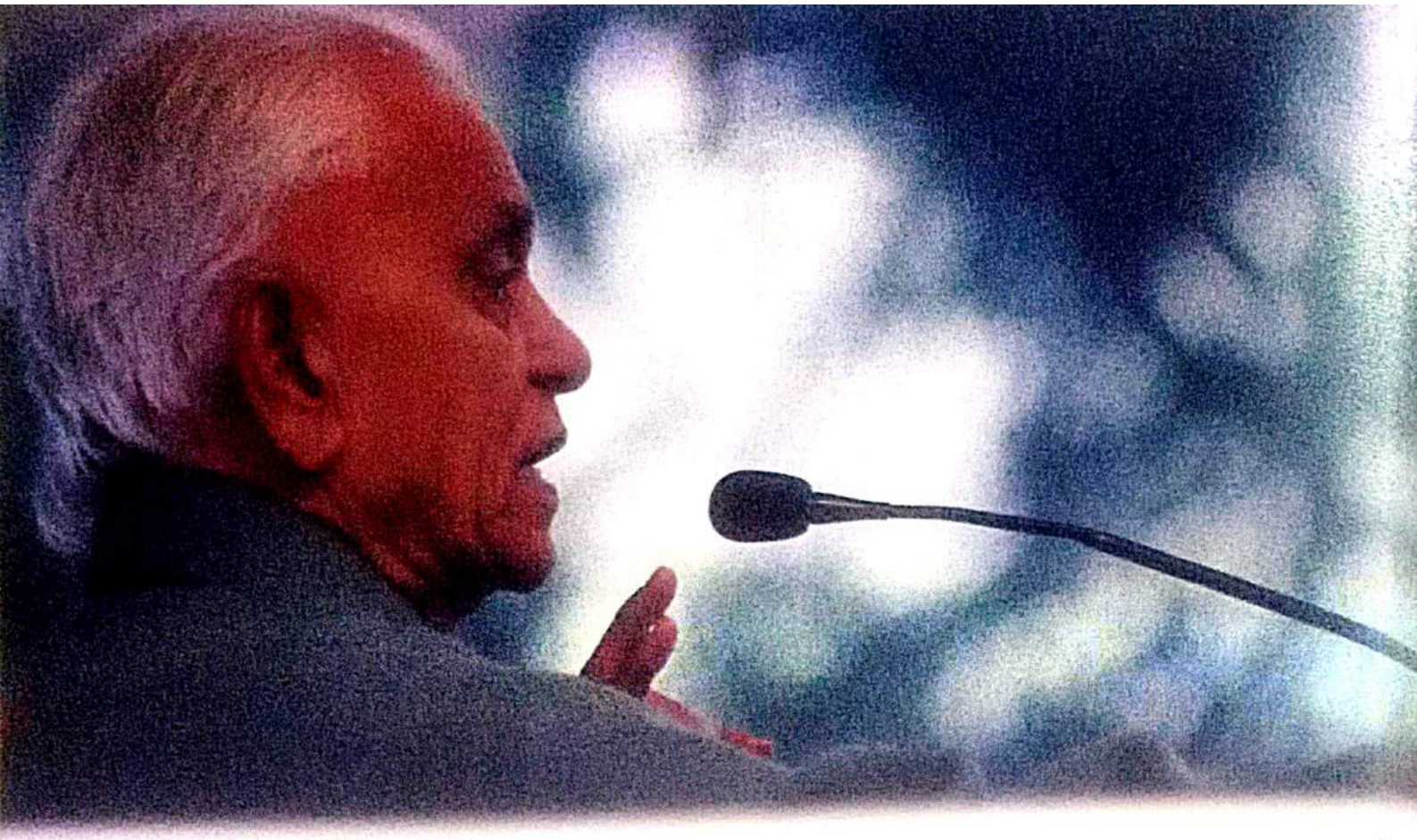

भाई जी श्री सुब्बाराव जी का उद्‌बोधन

बधाई आपको। आपकी संस्था और कार्यक्षेत्र भी बढ रहा है । महात्मा गांधी का जन्म दिन 2 अक्टूबर अब विश्व भर में अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जायेगा । राष्ट्रसंघ में यह प्रस्ताव विश्व के सारे देशों ने मिलकर पारित कर दिया है । भारत सरकार के प्रयासों से यह संभव हुआ है । उन्हें भी बधाई । पर अब जो काम रहा है सरकार का वह है महात्मा गांधी को गांवों तक कैसे पहुंचाया जाये इसकी भी योजना बनाइये– बडे बडे नेताओं से भरी बैठक में मैंने कहा था जिसमें प्रधानमंत्री, सोनियाजी, राजनाथ जी आदि नेता शामिल थे । वहां गांवों तक गांधी को पहुंचाने की बात मैंने कही थी । हमारे युवा मित्र मालवीय जी और आप सबने मिलकर यह बहुत बड़ा कदम उठाया है – महात्मा गांधी को आप गांवों तक ले जा रहे हैं । आपको बधाई, आपको कामयाबी मिले यही मेरा आशीर्वाद है। गांधी को गांव में पहुंचाने का मतलब यह नहीं है कि मूर्ती स्थापित कर दो, सड़क का नाम महात्मा गांधी मार्ग रख दो जैसा दिल्ली में बडी सड़क का रखा गया है । गांधी चाहते थे भारत का नक्शा बदल जाये । यही करना है आपको यही है गांधी को गांवों तक पहुंचाना। तो कैसे बदलेगा यह नक्शा– गांव विकास के आपके काम से बदलेगा । भारत की आजादी के बाद ही दुनिया के 116 राष्ट्र आजाद हुये एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका में, वे सभी कहते हैं हम तो गांधी के कारण आजाद हुये किताब में लिख दिया ।

मैं सोचता हूँ महात्मा गांधी की सबसे बडी देन है– उन्होंने बडी अहिंसक फौज तैयार की, चरित्रवान, निष्ठावान कार्यकर्ताओं का निर्माण किया। सक्रिय सक्षम कार्यकर्ताओं का निर्माण किया। आज तो सब मिलते ही नहीं, अब तो वे अच्छा भी करें, पर अब वे पैसे की लालच में पड़ जाते हैं । निष्ठा का सवाल ही नहीं अब तो पैसा पैसा पैसा हो गया है ।

हमारे देश में 574000 गांव है । महात्मा गांधी की कल्पना थी कि 1–1 गांव में कम से कम 5 शांति सैनिक हो जावे जो आपदा पर भी सक्रिय हो और शांतिकाल में रचनात्मक कार्य करें। इतना श्रम और कष्ट उठाकर आप आये हैं, इसका लाभ आपको, ग्रामदूत इंस्टिट्यूट को और भारत माता को मिलना चाहिये । आप याद करके जायें ।

यूनाईटेड नेशन्स के 192 सदस्य राष्ट्रों में भारत जैसे धर्म–भाषाओं की इतनी विविधता वाला एक भी राष्ट्र नहीं । इसीलिये गांधीजी ने कहा लोग भेदभाव भूलजायें, मेरीजाति, मेरा धर्म, मेरी भाषा यदि यही सोचता रहेगा आदमी तो देश टुकडा टुकडा हो जायेगा । दुनिया का सबसे मजबूत राष्ट्र सोवियत संघ टुकडा टुकडा हो गया, यूगोस्लाविया, चेकोस्लावाकिया, ये सब टुकडे हो गये । गांधी जी तो पाकिस्तान को भी अलग नहीं चाहते थे ।

भाई जी...

बंदूक से भारत एक नहीं रह सकता क्योंकि सोवियत के पास बहुत बडी बंदूक थी फिर भी टुकडा हो गया । लोगों के भीतर एकता की कमी हुई सोवियत टुकडा-टुकडा हो गया । बंदूक नहीं हमे लोगों का बडा दिल हमको एक बनाये रखेगा दिल छोटा हुआ तो भारत टुकडे टुकडे हो जायेगा अतः हमारा पहला काम दिलों को जोडकर रखना है । गांधी ने सूत्र दिया साम्प्रदायिक सद्भावना– सब मिलके रहो। दूसरा हर किसी को काम मिलना चाहिये गरीबी हटाने का तरीका है रोजगार देना पैसा बांटना नहीं।

यहां कोई मंत्री नहीं आया पर जब पिछली पद यात्रा में हमारे साथ 25000 लोग गांवों से आये तो मंत्री खुद आ गये अगली बार जब ग्रामदूत बडी संख्या में यहां आये तो ऐसा हो कि मालवीय जी को बुलाना न पडे मंत्री खुद ब खुद आये आप ग्रामदूतों की ऐसी ताकत बनाईये –बढाईये । अब एक लाख आयेंगे–आदिवासियों ने नारा बनाया है ***'हर हाथ को काम चाहिये बंदूक नहीं कुदाल चाहिये'*** । कुदाल नहीं मिलेगा तो फिर वे बंदूक ही पकडेगा, क्यों बंदूक पकडता है माओवाद, नक्सलवाद के नाम से क्योंकि गरीबी बेरोजगारी बढ रही है महात्मा गांधी ने 1923 में कहा कि हर हाथ को तब काम मिलेगा जब छोटे छोटे उद्योग खुल जायेंगे बडे उद्योगों फेक्ट्रीयों से सबको रोजगार संभव नहीं देश के हरगांव में छोटे छोटे उद्योग जाना चाहिये । ग्रामदूतों को इसदिशा में सोचना है पहला काम लोगों को एक बनाकर रखना दूसरा गांव में हरहाथ को काम दिलाना तीसरा काम लोगों को नशाखोरी से बचाना चरित्रवान बनाना होगा अन्यथा पैसा आने पर लोगों का पतन नहीं रूकेगा गांव में शराबबंदी तंबाखू सेवन रोकना यह ग्रामदूतों का तीसरा काम होगा गुटखा भी बंद करेंगे । चौथा काम भ्रष्टाचार खत्म करना ।बाहर भारत के युवक युवतियां बडा काम करके देश का सम्मान बढा रहे हैं और यहां भारत में भ्रष्टाचारी मंत्री पद पर बैठे हैं मौका मिला पैसा दबोचा, क्या हो गया मेरे हिन्दुस्तान को। भारत माता पर लगे इस भ्रष्टाचार के धब्बे को हमें मिटाना है ।

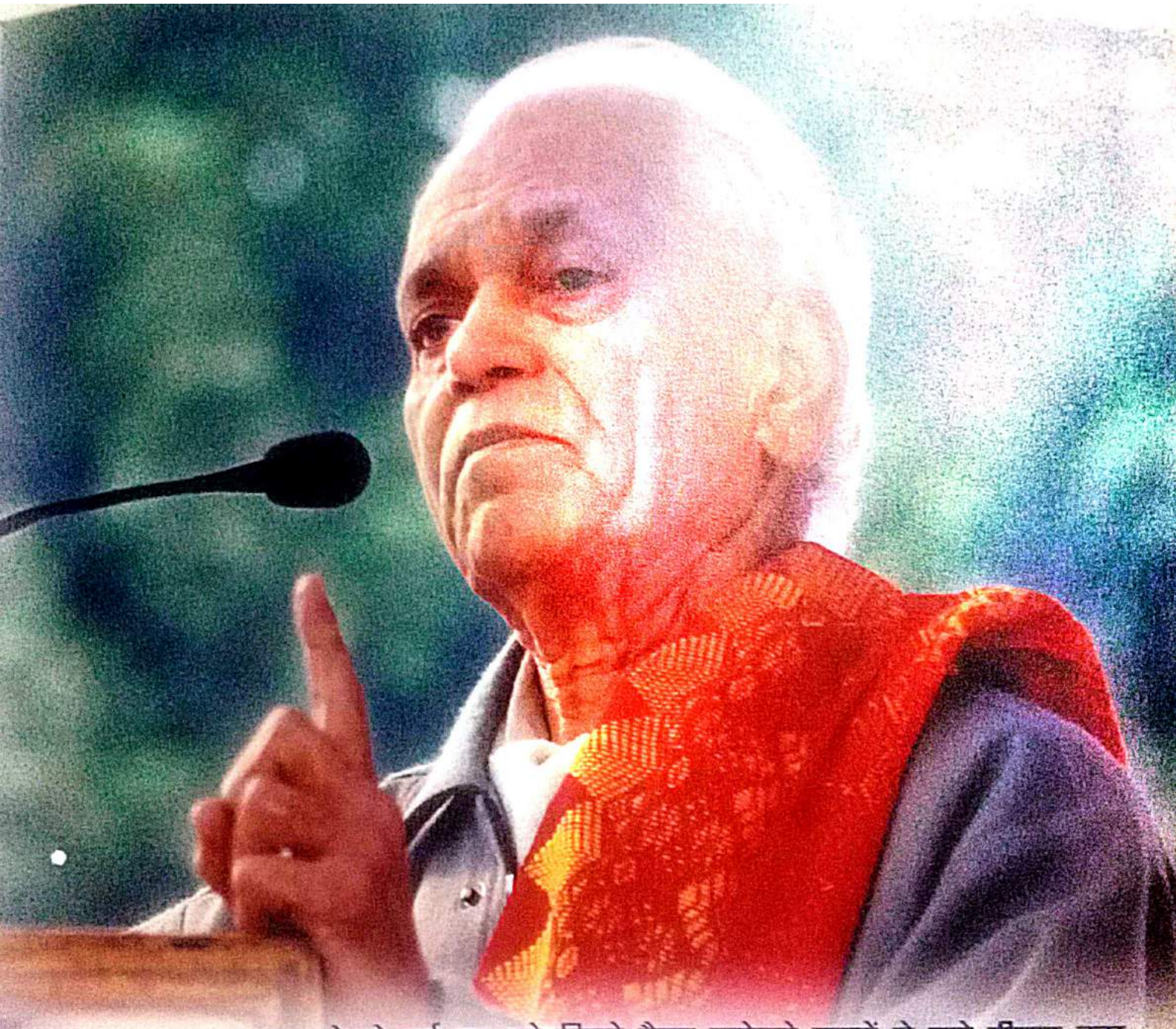

भारत माता आजाद तो हो गई पर पढे लिखे पैसा दबोचने वालों ने इसे बीमार बना दिया है हमें मिलकर हिन्दुस्तान से भ्रष्टाचार की बीमारी को खत्म करना है ।

हमारा दिल इतना बडा हो कि सारे भारत को हमारा घर मान सके सबको काम, मिले पूर्ण नशा बंदी हो, हिन्दुस्तान से भ्रष्टाचार के कलंक को हम मिलकर मिटा दें ये चार सूत्र मैं आपको देता हूँ ।

अपने आपको पहिचानों – ''अप्प दीपो भवा'' भगवान बुद्ध ने कहा – भगवान आपके भीतर है सभी धर्म यही कहते हैं ,आप ग्रामदूत भी अपने में बैठे ईश्वर की शक्ति को पहिचानिये और पूरे उत्साह से 4 सूत्रीय परिवर्तन में जुट जाईये, एक घंटा देह को, एक घंटा देश को, यह नारा देता हूँ मैं ।

संविधान में ग्राम सभा के अधिकार की बात है गांवों में ग्रामदूत ग्राम सभा करे चाहे पंच–सरपंच आये न आये महिने में एक बार ग्राम सभा आप अवश्य बुलायें उनके सुख दुख की बात करें ।

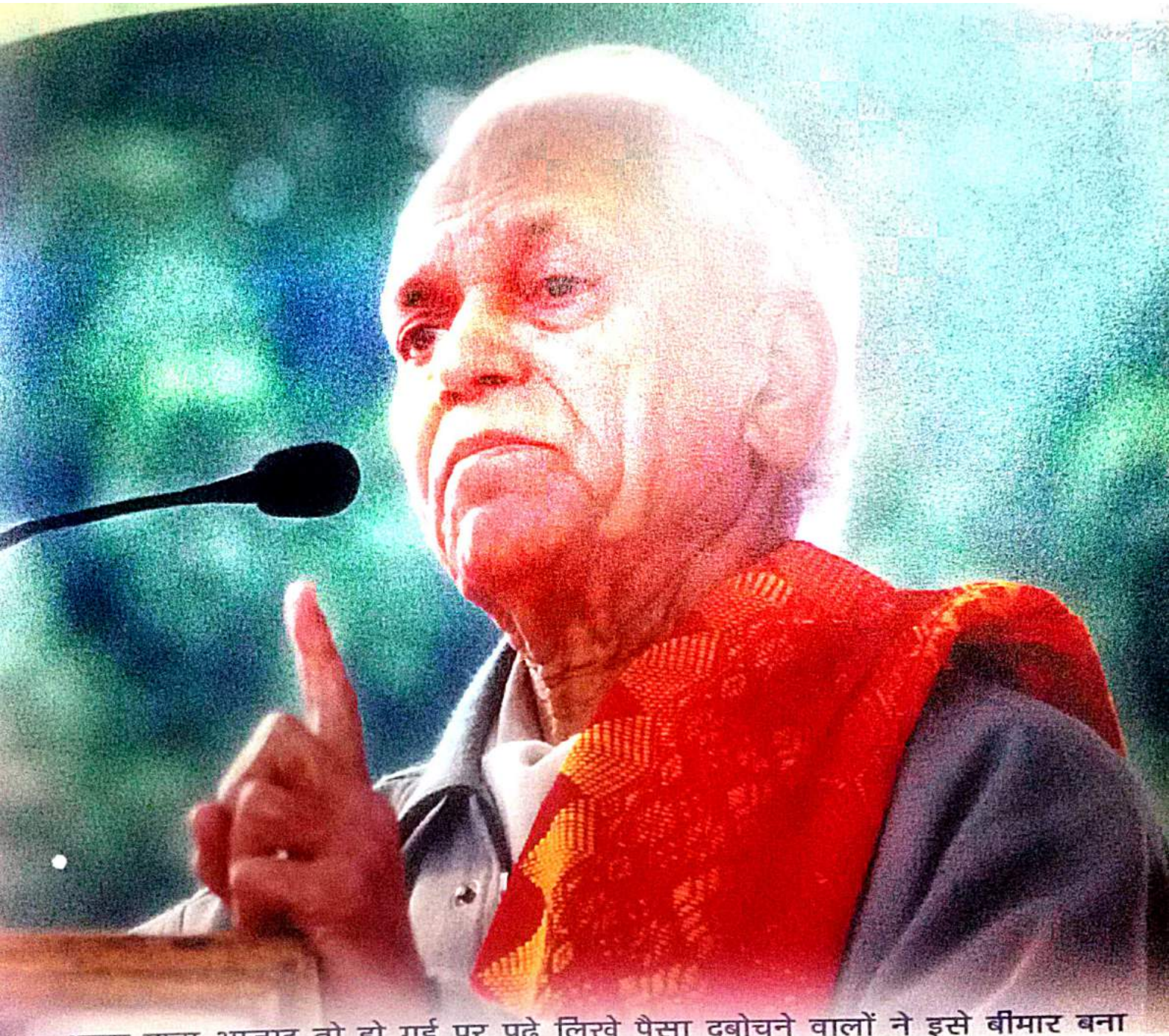

भारत माता आजाद तो हो गई पर पढे लिखे पैसा दबोचने वालों ने इसे बीमार बना दिया है हमें मिलकर हिन्दुस्तान से भ्रष्टाचार की बीमारी को खत्म करना है ।

हमारा दिल इतना बडा हो कि सारे भारत को हमारा घर मान सके सबको काम, मिले पूर्ण नशा बंदी हो, हिन्दुस्तान से भ्रष्टाचार के कलंक को हम मिलकर मिटा दें ये चार सूत्र मैं आपको देता हूँ ।

अपने आपको पहिचानों – ''अप्प दीपो भवा'' भगवान बुद्ध ने कहा – भगवान आपके भीतर है सभी धर्म यही कहते हैं ,आप ग्रामदूत भी अपने में बैठे ईश्वर की शक्ति को पहिचानिये और पूरे उत्साह से 4 सूत्रीय परिवर्तन में जुट जाईये, एक घंटा देह को, एक घंटा देश को, यह नारा देता हूँ मैं ।

संविधान में ग्राम सभा के अधिकार की बात है गांवों में ग्रामदूत ग्राम सभा करे चाहे पंच–सरपंच आये न आये महिने में एक बार ग्राम सभा आप अवश्य बुलायें उनके सुख दुख की बात करें ।

29-30 दिसंबर नई दिल्ली

कसरत और खेल साथ साथ
बच्चे जरूर खेलें, बड़े भी खेलें

...के दुलारा, देश हमारा
प्यारा हिन्दुस्तान
हमारा भारत वर्ष महान
सर्वधर्म समभाव हमारा
इस पर हमें गुमान.....

आपके कार्यों से भारत माता और शक्तिशाली होगी। आपको शुभकामनाएं।

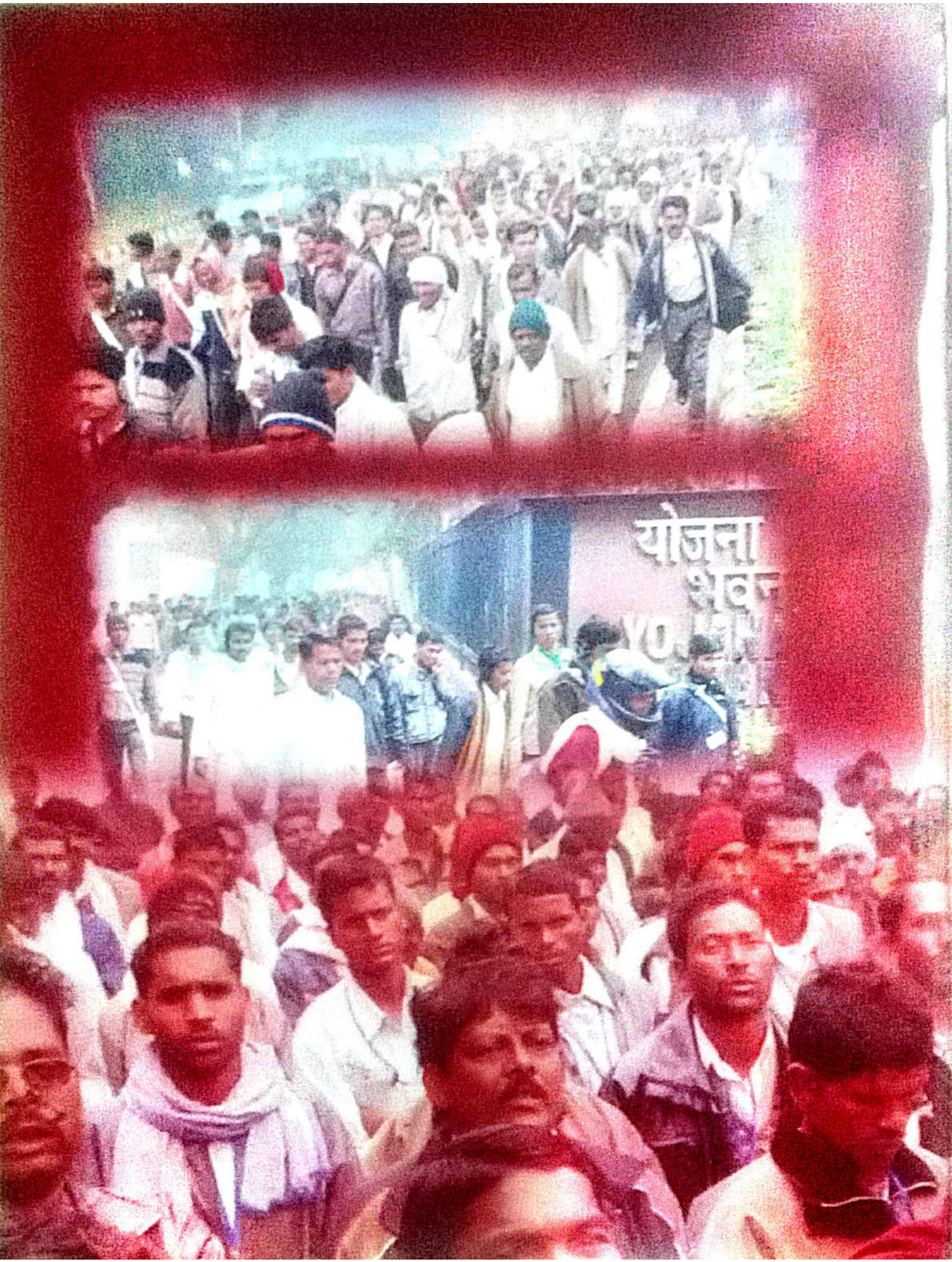
योजना